

नवम्बर माह की साधनायें

देवस्थान एकादशी पर देव प्रबोधिनी एकादशी साधना

यह साधना सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली, कल्याणकारी और सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली एकमात्र साधना है। जिसके द्वारा व्यक्ति में वे सभी शक्तियां समाहित हो जाती हैं, उसे सभी कार्यों में सफलता मिलती है, चाहे वह भौतिक पक्ष हो या आध्यात्मिक पक्ष, उसे पूर्णता प्राप्त होती ही है।

उक्त साधना देवस्थान एकादशी पर जो कि दिनांक 01 नवम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि अक्टूबर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 3 पर अंकित है।



सद्गुरु सन्यास महोत्सव पर गुरु ब्रह्मा स्वरूप साधना

इस साधना की तेजस्विता से साधक के अन्दर भी पूर्ण गुरुत्व का स्थापन होता जाता है। ब्रह्म को आदिगुरु कहा गया है, और उन्हीं के क्रम में ब्रह्माण्ड के सोलह और गुरु कहे गये हैं, और इस साधना द्वारा उन सभी के तेज का स्थापन साधक के शरीर में होता है।

उक्त साधना सद्गुरु सन्यास महोत्सव पर जो कि दिनांक 05 नवम्बर 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अक्टूबर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 20 से 21 पर अंकित है।



काल भैरव जयन्ती पर बावन भैरव साधना

यह साधना सरल और सौम्य साधना है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी बिना किसी अड़चन के सम्पन्न कर सकता है। इस साधना से शत्रु स्तम्भन, एक्सीडेंट, दुर्घटना, आगजनी, गोली-बन्दूक, शस्त्र, अकालमृत्यु का भय समाप्त होता है। परिवार की सर्वसुरक्षा होती है।

उक्त साधना काल भैरव जयन्ती पर जो कि दिनांक 12 नवम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि अक्टूबर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 23 से 25 पर अंकित है।





गृहस्थ सन्यस्थ चेतना कर्म शक्ति वृद्धि सहस्र लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा

व्यक्ति की मानसिकता में जो संदेह उसे घेरे रहते हैं और इन संदेह और अविश्वास के कारण वह अपनी आत्मस्थिति को अनुभव नहीं कर पाता। व्यस्त जीवन, कार्य भार एवं कर्तव्यों के बोझ से व्यक्ति का जीवन एक मजदूर सा हो जाता है और वह तनावों से, चिंताओं से ग्रस्त हो जाता है और कई बार तो वह मानसिकरोगी तक भी हो जाता है।

जीवन में पढ़ाई, लिखाई, नौकरी, विवाह इत्यादि जितने भी कर्म हैं वे सब फल के अधीन हैं। फल की आशा को त्याग कर कोई भी व्यक्ति कर्म नहीं करता है और यही उसकी समस्याओं का मूल कारण है। जो कर्म कर्तव्य भाव से किया जाता है, उसमें व्यक्ति उसके कर्म के फल से चिपकता नहीं है जबकि बिना कर्तव्य की सकाम क्रिया ऐसा कर्म बनती है जो उसे निरंतर बंधनों में लपेटती रहती है। जिस कर्म के फल में मनुष्य की बुद्धि लिप्त है और जो कर्म इच्छा से प्रेरित होकर किया जाता है वही कर्म फल, संस्कार तथा जन्म-मरण के कारण बनते हैं। लेकिन जो कर्म कामना रहित फल की आशा से मुक्त होकर किया जाता है तो उसे कर्मयोग कहते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति कर्म फल पर आश्रित न रहकर कर्म करता है वही सन्यासी है, वही योगी है।

सद्गुरुदेव निखिल के सन्यास आश्रम प्रवेश दिवस कार्तिक पूर्णिमा की दिव्यतम चेतना में जीवन कर्मफल के इन्हीं सिद्धान्तों की चेतना को आत्मिक रूप से सभी समर्पित शिष्य आत्मसात कर सकेंगे। जो अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ दीक्षा है। इस दीक्षा के माध्यम से साधक-शिष्य अपनी आत्म चेतना से सम्पर्क स्थापित कर जीवन के सभी मूल कर्तव्यों का निर्वाह पूर्ण कर्मयोग स्वरूप में करने में सफल होता है। जिससे उनके सांसारिक जीवन में सुख-शांति, प्रसन्नता, आनन्द का वातावरण निर्मित होता है और वे अपने सांसारिक जीवन को श्रेष्ठतम स्वरूप में व्यतीत करते हुए पूर्णता की प्राप्ति करने की ओर अग्रसर होते हैं।

सन्यास महोत्सव अपने-आप में साधनात्मक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्व है और देखा जाये तो, पूरा भारतवर्ष इस कार्तिक मास में पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण से ओत-प्रोत होता है। इस मास का सन्यास महोत्सव का प्रत्येक दिवस अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि ये व्यक्ति के पूर्ण जीवन चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए इन दिनों में किसी भी प्रकार का किया गया कार्य अपने-आप में आने वाले वर्ष में फलप्रद होता है।

गृहस्थ सन्यस्थ चेतना कर्म शक्ति वृद्धि सहस्र लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100/-